झारखंड का हिंदी–खोरठा पाक्षिक पत्र

आपन माटी आपन देश

झार न्यूज

राँची, बुधवार
16 से 30 नवंबर 2022
पेज : 04, मूल्य : निःशुल्क
वर्ष : 01, अंक : 09
झारखंड संस्करण
UDYAM-JH-19–0000800

khorthajharnews@gmail.com

डिजिटल संस्करण

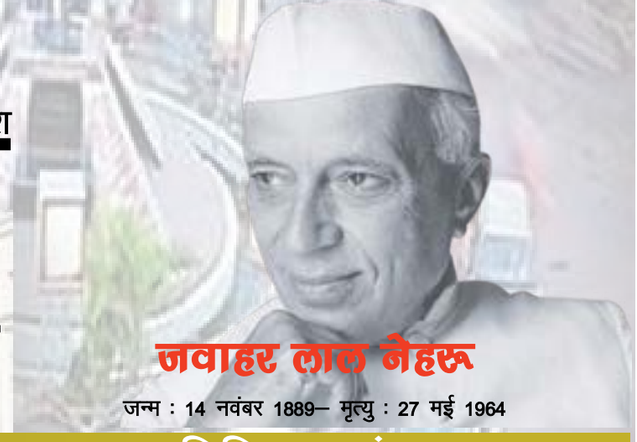

जवाहर लाल नेहरू
जन्म : 14 नवंबर 1889– मृत्यु : 27 मई 1964

विधि का विधान "भारत का संविधान"

प्रणय प्रबोध, संपादक

राँची : स्वतंत्रत भारत का निर्माण हुए 75 साल हो चुके हैं। अंग्रेजों के चंगुल से आजाद होने के बाद देश के नागरिकों को एक सूत्र में बांधने के लिए लोगों को अनुशासित जीवन शैली देने के लिए विधान की जरूरत पड़ी। एक ऐसा विधान जिसके निर्माण से भारत के नागरिकों को विभिन्न तरह की सेवाएं मिल सकें। भारतवासियों को उनका अधिकार मिल सके और भारत को संरक्षित किया जा सके। ऐसे ही एक विधान का निर्माण 2 साल 11 माह 18 दिन बाद तैयार हुआ। जिसे 26 नवंबर 1949 को राष्ट्र को समर्पित किया गया। यह कोई मामूली विधान नहीं। बल्कि भारत की तमाम विधियों को अपने अंदर सहेजे हुए "भारत का संविधान" है।

लोकतंत्र के चार स्तंभ और संविधान

15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ। उसी समय से भारत में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली है। लोकतंत्र के मुख्य रूप से चार मूलाधार माने जाते हैं। जिन्हें में न्यायपालिका, विधायिका, कार्यपालिका और प्रेस के नाम से जानते हैं। इनमें से तीन स्तंभ भारतीय नागरिकों की जरूरत के मुता. बिक उन्हें सुविधाएं मुहैया कराने के लिए बनाए गए हैं। जो कि भारवासियों की गतिविधियों पर नियंत्रण भी करती है। न्यायपालिका का निर्णय सर्वमान्य माना जाता है, वहीं विधायिका का काम कानून निर्माण करना है, कार्यपालिका का काम नियमों और कानूनों का अनुपालन कराना है। न्यायपालिका के क्षेत्राधिकार में भारत के अंदर निहित तमाम अदालतें आती हैं, जिनमें से दिल्ली में स्थित सुप्रीम कोर्ट को सर्वोच्च न्यायालय माना जाता है। विधायिका के अंतर्गत लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा, विधान परिषद् आते हैं। जिनके जिम्मे विधियों का निर्माण और उनमें संशोधन करना है। वहीं कार्यपालिका के अंतर्गत तमाम आलाधिकारी आते हैं, जो न्यायालय के आदेश और विधियों का अनुपालन कराते हैं। ताकि देश के नागरिकों को किसी तरह की कोई परेशानी न हो। लेकिन इन तीनों पर जो नजर रखते हैं, उन्हें लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना गया है। जिन्हें हम पत्रकार के नाम से जानते हैं। पत्रकार अन्य तीनों स्तंभों पर नजर बनाए रखते हैं और जनता तक जनहित में सही सूचना पहुंचाते हैं। इन चारों स्तंभों का जिक्र "भारत के संविधान" में देखने को मिलता है।

भारतीय संविधान दिवसरू 26 नवंबर

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार ने 19 नवंबर 2015 को संवैधानिक मूल्यों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 26 नवंबर को हर साल "संविधान दिवस" के रूप में मनाने का निर्णय लिया।

26 नवंबर संविधान दिवस

26 नवंबर 2022 को दिल्ली के सुप्रीम कोर्ट में संविधान दिवस मनाया गया। इस मौके पर भारत के चीफ जस्टिस डी.वाई.चंद्रचूड़, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, न्याय मंत्री किरेन रिजिजू समेत कई लोग शामिल हुए। इस बार का संविधान दिवस इसलिए खास माना गया, क्योंकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सुप्रीम कोर्ट से ई–कोर्ट परियोजना के तहत विभिन्न नई पहलों और वेबसाइट का उद्घाटन किया। कानून मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि विधायी विभाग ने 65 हजार कानून के शब्दों की शब्दावली तैयार की है। जिसे डिजिटाइज करने की प्रक्रिया जारी है। ये तमाम शब्द ऐसे हैं, जिसे जनता आसानी से इस्तेमाल कर सकती है। क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशित कानूनी शब्दावलियों को एकत्र, डिजिटाइज करने और जनता के लिए उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाएगा।

1500 से अधिक पुराने और अप्रासंगिक कानून खत्म

अक्टूबर 2022 में नई दिल्ली में आयोजित कानून मंत्रियों और कानून सचिवों के अखिल भारतीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संबोधित किया। संबोधन के दौरान पीएम मोदी ने कहा कि देश ने 1500 से ज्यादा पुराने और अप्रासंगिक कानूनों को रद्द कर दिया है। इनमें से अनेक कानून, तो गुलामी के समय से चले आ रहे हैं। कानून मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि शीतकालीन सत्र 2022 के दौरान केन्द्र सरकार 1500 से अधिक पुराने और अप्रासंगिक कानूनों को खत्म करेगी। क्योंकि अप्रचलित कानून आम लोगों के सामान्य जीवन में बाधक हैं और वर्तमान समय में कानून ये कानून प्रा. संगिक नहीं हैं। रिजिजू ने अनावश्यक कानून को आम आदमी के लिए बोझ बताया है।

बहरहाल, देखने वाली बात ये होगी कि आने वाले दिनों कानूनों में परिवर्तन के बाद आम नागरिकों के जीवन में कितनी सरलता आती है। हालांकि, इन तमाम तथ्यों को पढ़कर हम इतना जरूर कह सकते हैं कि किसी भी विधि का निर्माण संविधान में निहित अनुच्छेद और अनुसूचियों को ध्यान में रखकर ही किया जाता है। तभी तो हम "भारतीय संविधान" को "विधि का विधान" मानते हैं।

इतिहास के सफेद पन्नों में सिमटा 26/11 का काला अध्याय

प्रणय प्रबोध, संपादक

26 नवंबर 2008 का आतंकी हमला

26/11 इस तारीख का नाम सुनते ही हर भारतवासी का दिल सहम–सा जाता है। सांसे थम–सी जाती हैं और आंखें नम हो जाती हैं, क्योंकि यह तारीख भारत के इतिहास का वह काला अध्याय है। जब इकॉनोमिक कै. पिटल कहे जाने वाले मुंबई को आतंकवादियों ने गोलियों से छलनी कर दिया था। चारों तरफ अगर कुछ नजर आ रहा था, तो वह था सिर्फ "लाश।"

60 घंटों तक सिमटी जिंदगी

26 नवंबर 2008 को लश्कर के 10 आतंकवादियों ने मुंबई पर हमला बोल दिया। आतंकवादियों ने 160 से अधिक लोगों की सांसें छीन लीं। जबकि, 300 से अधिक लोग अस्पतालों में जिंदगी से जंग लड़ रहे थे। 26 नवंबर भारत के इतिहास के सफेद पन्ने में सिमटा वह काला अध्याय है। जब आतंकवादियों ने 60 घंटों तक पूरी मुंबई को बंधक बना लिया था। जल मार्ग की ओर से नाव के सहारे कराची से आए आतंकियों ने पब्लिक प्लेस को अपना निशाना बनाया। रास्ते में चार भारतीय नाव पर सवार थे। जिन्हें इन आतंकियों ने अपना निशाना बनाया। लोगों को देखकर मछुआरों को शक हुआ। उन्होंने पुलिस को जानकारी भी दी, लेकिन उस समय पुलिस चौकन्ना नहीं हुई।

छत्रपति शिवाजी टर्मिनल पर चीख–पुकार

चार टुकड़ों में बंटने के बाद आतंकवादी वारदात को अंजाम देने के लिए टैक्सी से निकल पड़े। रात को 9 बजकर 30 मिनट पर छत्रपति शिवजी टर्मिनल पर

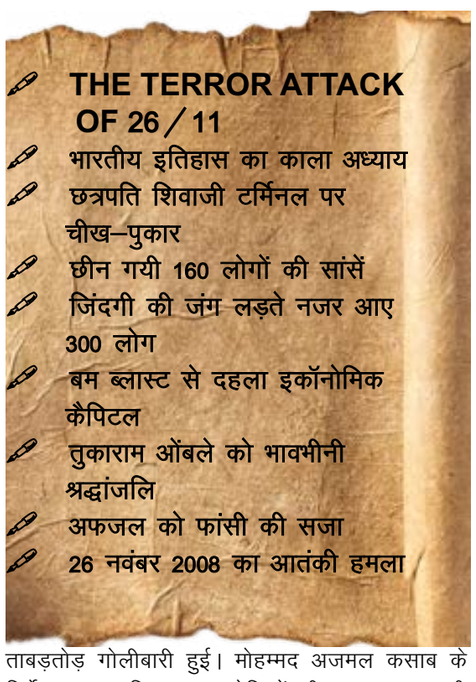

ताबड़तोड़ गोलीबारी हुई। मोहम्मद अजमल कसाब के निर्देश पर 15 मिनट तक गोलियों की तड़तड़ाहट जारी रही। इसमें 52 लोगों की मौत हो गयी। वहीं 109 लोग जख्मी हो गये। आतंकियों की यह गोलीबारी सिर्फ शिवाजी टर्मिनल तक ही सीमित नहीं रही। बल्कि दक्षिणी मुंबई का लियोपोल्ट कैफे को भी उन्होंने अपना शिकार बनाया। रात 10 बजकर 40 मिनट पर विले पारले इलाके में आतंकियों ने एक टैक्सी को बम से उड़ाया। जिसमें चालक और एक यात्री की मौत हो गयी। इससे 15–20 मिनट पहले बोरीबंदर में इसी तरह के धमाके में एक टैक्सी ड्राइवर और दो यात्रियों की जानें जा चुकी थीं। वहीं 15 घायल हो गए थे।

शहीद तुकाराम ओंबले को नमन

आतंकी हमले की यह कहानी यहीं खत्म नहीं होती है। 26/11 के तीन बड़े मोर्चों में मुंबई का ताज होटल, ओबेरॉय होटल और नरीमन हाउस शामिल था। तीन दिनों तक सुरक्षा बल आतंकवादियों से जूझते रहे। इस दौरान धमके हुए, आग लगी, गोलियां चली और बंधकों को लेकर उम्मीद टूटती–जुड़ती रही। 29 नवंबर की सुबह तक कुल नौ हमलावरों को सुरक्षाबलों ने मौत के घाट उतार दिया। अगर कोई बचा था, तो वो था मोहम्मद अजमल कसाब। पूरे मुंबई की नाकेबंदी की गयी थी। इस बीच चार पहिया से अजमल भागने की फिराक में था। चारों ओर से पुलिस ने उसे घेर लिया था। कार पर कई गोलियां चलायी गयी थी। लेकिन फिर भी अजमल जिंदा था। पुलिस ऑफिसरों ने उसे मारा हुआ सोच उसके पास गए। लेकिन अजमल ने गोली चला दी और हवालदार तुकाराम ओंबले की मौत हो गयी। तुकाराम के मुंह से अंतिम शब्द निकला तो, वह था "जय हिंद।"

अफजल का अंत

निर्दोष लोगों की जान लेने वाले अजमल कसाब को मुंबई हाईकोर्ट ने फांसी की सजा सुनायी। 21 नवंबर को पुणे के यरवड़ा जेल में सुबह 7 बजकर 30 मिनट पर अजमल को फांसी दे दी गयी। भारतवासियों ने चौन की सांसे ली और कहा– अफजल का अंत हुआ।

पुत्र मोह में बिलखता समाज

जीवन पर है उनका अधिकार,
शिक्षा जीवन का आधार।
अपनी सोच पर पंख लगाओ,
बेटियों को खूब पढ़ाओ।।

ऋचा कुमारी, एमिटी यूनिवर्सिटी, रांची

पुत्र मोह में राजा दशरथ ने तो सिर्फ अपने प्राण का त्याग किया था, लेकिन धृतराष्ट्र ने पूरे कुरु वंश का नाश कर दिया था। वर्तमान समय में भी रूढ़िवादी सोच का यह परिणाम है कि हम आधुनिक तो हो गए हैं, लेकिन मान. सिकता में कोई बदलाव नजर नहीं आ रहा। कुछ गांव की बात छोड़ दें, तो वर्तमान समय में भी लोग पुत्री की अपेक्षा पुत्र से अधिक मोह रखते हैं।

समाज के लिए पुत्र–पुत्री जरूरी

शास्त्रों के मुताबिक कुल 84 लाख योनियां हैं। इनमें से अधिकांश में नर और मादा दोनों आते हैं। ठीक वैसे ही मानव जाति में भी नर और नारी दोनों की विद्यमानता है। मनुष्य ही वह जाति है, जिसे अपनी बातों को रखने की स्वतंत्रता है। लोग संवाद के दौरान एक–दूसरे की बातों को सुनकर समझ पाते हैं, चाहे वह किसी भी माध्यम से संवाद हो, लेकिन सामने वाला उसे समझ पाता है। नर और मादा के बिना मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। खासकर भारतीय समाज में नर को ईश्वर और नारी को देवी का रूप माना गया है। लेकिन इन सबके विपरीत समाज में असमानता नजर आती है। क्योंकि लोगों को पुत्र मोह ने घेर रखा है और उनकी ये सामाजिक भ्रांति अबतक नहीं टूटी है कि बेटियां किसी भी मायने में बेटों से कम नहीं होती।

जंजीरों के बीच पलती जिंदगी

यहां जंजीर का मतलब लोहे के सिक्कड़ और चेन बिल. कुल नहीं। बल्कि यह तो वह जंजीर है, जो बेटियों को दहलीज लांघने से रोकता है। बेटियों के माता–पिता को इतनी अधिक चिंता होती है कि वो बेटियों के घर से निकलने से पहले कई सवाल कर देते हैं। सवालों में घिरी जिंदगी इन्हें हर पल कचोटती हैं और ये खुद से सिर्फ एक ही सवाल करती हैं– "आखिर मैं बेटी क्यों?"

शक की सुई पर बेटियां

वर्तमान भारतीय समाज में शहरों में कुछ सुधार तो नजर आता है। लेकिन अधिकांश जिलों और गांवों में आज भी बेटियों को शक की नजरों से ही देखा जाता है। खासकर उस वक्त जब वो किसी लड़के से बात कर ले, किसी काम के लिए वो किसी लड़के से मुलाकात कर ले। जब लोगों को इसकी भनक लगती है, तो चार मुंह से चार बातें निकलती हैं। कोई इसे प्रेम का प्रपंच कह डालता है, कोई इसे मिलन वेला की संज्ञा दे डालता है। हालांकि शत प्रतिशत इन बातों से इंकार नहीं किया जा सकता, लेकिन इसका मतलब यह कतई नहीं कि बेटियों की शिक्षा को बाधित की जाए। उनके सपनों को रौंद दिया जाए, बल्कि ऐसी स्थिति में जो निर्णय आप एक बेटे के लिए लेते हैं, ठीक वैसे ही निर्णय अपनी बेटियों के लिए भी लें। क्योंकि स्वतंत्रता का अर्थ यह कतई नहीं कि अनुशासन का अंत हो जाए।

बेटियों के प्रति बदलती सामाजिक धारणा

ऐसा बिल्कुल भी नहीं है कि समाज में बेटियों को लेकर सिर्फ नकारात्मक धारणाएं हैं। बल्कि वर्तमान भारतीय समाज के लोग बेटियों को सकारात्मक जीवन शैली में अपना अहम योगदान दे रहे हैं। अब हालात बदल रहे हैं और कई क्षेत्रों में बेटियां अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही हैं। इसी समाज में बेटियों के जन्म पर कई परिवार उत्सव मनाते नजर आ रहे हैं। बिहार–झारखंड के कई गांव ऐसे हैं, जहां बेटियों के जन्म पर थाल बजाने की परंपरा है, कई गांवों में बेटियों के चरण पखार कर उसके पानी को पीने की परंपरा है। राजस्थान के राजसमंद जिले के पिपलांत्री गांव में बेटी के जन्म पर 111 पौधे लगाने की परंपरा है। रूढ़िवादी समाज की धारणाओं में परिवर्तन नहीं आता, तो शायद प्रतिभा देवी सिंह पाटिल देश की पहली महिला राष्ट्रपति नहीं बनती, अगर सामा. जिक परिवर्तन नहीं आता, तो शायद वर्तमान समय में द्रौपदी मुर्मू देश की पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति नहीं होती। कल्पना चावला आसमान की सैर नहीं करती, मैरी कॉम एक बेहतर मुक्केबाज नहीं बन पाती, प्रियंका चोपड़ा, कैटरीना कैफ और दीपिका पादुकोण जैसी अदाक. ारा हमें इंटरनेशनल स्क्रीन पर नजर नहीं आतीं। इसलिए यह कहना सही नहीं होगा कि बेटियों के प्रति समाज के लोगों की धारणा पूर्व की तरह बनी हुई है, बल्कि समय के साथ–साथ सोच में भी परिवर्तन आया है।

पुत्र के लिए बिलखता समाज

वर्तमान भारतीय समाज में हर कोई पुत्र के लिए नहीं बिलख रहा, बल्कि ये उन लोगों में से हैं, जिनके मन–मस्तिष्क में यह प्रत्यारोपित कर दिया गया है कि बेटा धन होता है बेटियां परायी धन। बेटे पैसे कमाकर माता–पिता को देते हैं और बेटियां कमाये हुए धन को ससुराल का श्रृंगार बनाती हैं। लेकिन वर्तमान समय में बेटे–बेटियों को समान अधिकार मिल चुका है। बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए सरकार की ओर से कई योजनाएं चलायी जा रही हैं। इन सबके बावजूद दहेज के दानव दूत बेटियों को बेटों से कम आंक रहे हैं। जबकि बेटियों को इतना काबिल बनाना चाहिए कि सामने वाला दहेज लेने से पहले हजार बार सोचे।

भारत की भविष्य बेटियां

बेटियों को संवारोगे,
तो भारत की भविष्य बन जाएंगी।
बेटियों को पुकारोगे,
तो दौड़ी चली आएंगी।।

बेटियों को पढ़ाओगे,
तो समाज को शिक्षित बनाएंगी।
बेटियों को बनाओगे,
तो भारत का भविष्य बन जाएंगी।।

मैं 'सीता' मैं 'काली'

स्वाति कुमारी,
एमिटी यूनिवर्सिटी, रांची

देवी का रूप

भारत में यह माना जाता है कि लड़कियां देवी की छाया होती हैं, लेकिन उन्हें देवी की तरह नहीं माना जाता है, क्या यह विरोधाभास नहीं है? यदि आप एक लड़की हैं, तो आप क्या पहनती हैं, आप कैसे चलती हैं, कैसे बोलती हैं, उसके आधार पर आपको समाज के लोग आंकते हैं। यदि आप जोर से हंसती हैं, आपके पुरुष मित्र हैं, आप पश्चिमी पोशाक पहनती हैं, तो आप ष्संस्कारीष नहीं हैं। अगर कोई लड़की अपनी मां के पेट में सुरक्षित नहीं है, तो वे किसी भी जगह सुरक्षित नहीं।

मौका ना मिला

उनमें से ज्यादातर को तो जीने का मौका ही नहीं मिलता, उन्हें उनके जन्म से पहले ही मार दिया जाता है और उनका क्या कसूर, कुछ नहीं। एक लड़की के लिए बहुत से बेकार मापदंड बनाए जाते हैं। जैसे अगर वो सूट पहने, सड़क पर चलती है, तो वो सड़क के सिवा कहीं न देखे, अगर वो समाज के सभी भयानक नियमों का पालन करती है, तभी वो एक आदर्श लड़की है।" भारत अपने लोकतंत्र के लिए जाना जाता है, लेकिन जितनी गंभीरता से लड़कियों को सभी अधिकार प्राप्त हैं, क्या वे स्वतंत्र हैं?

बहू चाहिए पर बेटी नहीं

बहू, पत्नी तो सभी चाहते हैं, लेकिन बेटी किसी को नहीं चाहिए। यदि कोई लड़की ष्सीता मांष जैसी हो सकती है, तो वह ष्माँ कालीष का अवतार भी ले सकती है। मेरे लिए एक आदर्श महिला वह है जो अपने परिवार को गौरवान्वित करती है, उसकी आवाज बनती है और अपनी शर्तों पर अपना जीवन जीती हैं। अगर आप अपनी बेटी या बहन के लिए बेहतर जिंदगी चाहते हैं, तो अपनी सोच बदलिए कि आप दूसरी लड़कियों के साथ क्या करते हैं? जो आपके अपने परिवार के साथ भी हो सकता है।

'उस्ताद बिस्मिल्लाह खान युवा सम्मान' से सम्मानित होंगे बिनोद कुमार महतो 'रसलीन'

राँची : घोड़ा नृत्य शैली को झारखण्ड में पुनर्स्थापित करने में अहम भूमिका निभाने वाले कसमार के कलाकार विनोद महतो रसलीन का चयन संगीत नाटक अक. ादमी "उस्ताद बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार" 2021 के लिए हुआ है।

उन्हें राष्ट्रपति के हाथों एक समारोह में यह पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। विनोद की इस उपलब्धि से कसमार समेत पूरे बोकारो जिला में खुशी की लहर फैल गई है। विनोद कुमार महतो सिंहपुर निवासी नेपाल महतो व मालती देवी के पुत्र हैं। इनके दादा बनू राम महतो नगाड़ा के सुप्रसिद्ध वादक थे। उन्ही से प्रेरित होकर विनोद ने कला संगीत को अपने जीवन का हिस्सा बनाया। 2008 में पद्मश्री मुकुंद नायक की कुंजबन संस्था से जुड़े और लोक संगीत – नृत्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के उपरांत घोड़ा नाच को लोकनृत्य शैली की ओर रुझान हुआ।

इस दौरान घोड़ा लोक नृत्य के प्रशिक्षण , प्रदर्शन, संरक्षण एवं संवर्धन के लिए विभिन्न सरकारी और गैर – सरकारी संस्थाओं से सम्मानित भी किया गया है।

प्रकाशनार्थ

ईडी ने अपना जांच का दायरा नहीं बढ़ाया तो होगा आंदोलन

विजय शंकर नायक

रांची : इडी अपना जांच का दिसम्बर 2019 से पूर्व रघुवर सरकार तक दायरा बड़ाए नही तो व्यापक आंदोलन किया जायेगा ।

ईडी के चार्ज शीट मे इडी ने यह स्पस्ट कहा है कि साहिबगंज मे हुए अवैध उत्खनन में जांच के दौरान यह पता चला की पूर्वर्ती भारतीय जनता पार्टी की रघुवर सरकार के कार्यकाल में 233 रैक रेलवे साइडिंग से बाहर गए और हेमंत सोरेन के कार्यकाल में मात्र 18 रैक ही रेलवे साइडिंग से बाहर भेजने गये तो फिर ईडी रघुवर सरकार के कार्यकाल की क्यों नहीं जांच कर रही है यह झारखंड की जनता इडी से जानने के लिए उत्सुक है ।

उपरोक्त बातें आज आदिवासी मूलवासी जन अधिकार मंच के केंद्रीय उपाध्यक्ष सह हटिया विधानसभा क्षेत्र के पूर्व प्रत्याशी विजय शंकर नायक ने आज कही । उन्होंने यह भी कहा कि वोट से पराजित भारतीय जनता पार्टी अब ईडी के माध्यम से सरकार को अस्थिर कर सरकार के गिराने के खेल में लगी हुई है जो लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं है ।

श्री नायक ने आगे यह भी कहा कि 233 रैक जो रेलवे साइडिंग से बाहर खनिज अवैध उत्खनन कर बाहर भेजे गए हैं वे सभी के सभी दिसंबर2019 से पूर्व के हैं और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के कार्यकाल में मात्र 18 ट्रैक ही रेलवे साइडिंग से भेजे गए हैं मगर जांच के सभी बिंदु हेमंत सोरेन के माथे कर दिया गया है और (सभी दोष नंदू घोष की नीति) अपनाकर हेमंत सोरेन सरकार को बदनाम करने की साजिश भारतीय जनता पार्टी के लोगों के द्वारा की जा रही है जिसका मुंह तोड़ जवाब आने वाले दिनों में दलित आदिवासी मूलवासी समाज देने का काम करेंगे अन्यथा ईडी अपना जांच का दायरा 2019 से पूर्व बढ़ाए अन्यथा इडी के खिलाफ भी अब झारखंड में व्यापक रूप से प्रदर्शन किया जाएगा ।

आज इडी पूर्वर्ती भारतीय जनता पार्टी की सरकार के मुखिया श्री रघुवर दास को बचाने की दिशा में काम कर रही है और एक चुनी हुई लोकतांत्रिक सरकार को येन केन प्रकारेण बदनाम कर अद्पस्थ करने की खेल खेल रही है जिसे झारखंड की जनता खासकर दलित आदिवासी मूलवासी समाज इस खेल को झारखंड में सफल नहीं होने देगी और इसका कड़ा प्रतिरोध किया जाएगा ।

श्री नायक ने आगे कहा कि आखिर ईडी की जांच का दायरा क्यों हेमंत सोरेन के इर्द–गिर्द ही क्यो घूमने का काम कर रहा है क्यों नहीं दिसंबर 2019 से पूर्व की पूर्ववर्ती रघुवर सरकार को भी जांच के घेरे में क्यों नहीं लिया जा रहा है यह बहुत ही सोचनीय प्रश्न है और झारखंड की जनता जानना चाहती है कि जिस चार्जशीट में ईडी ने खुद यह कबूलने का काम किया कि 2019 दिसंबर से पूर्व 233 ट्रैक रेलवे साइडिंग से अवैध उत्खनन कर साहिबगंज से बाहर भेजे गए उसके बाद भी मात्र 18 ट्रैक रेलवे साइडिंग से बाहर भेजने के मुद्दे पर हेमंत सरकार के कार्यकाल को बड़ा मुद्दा बनाने का काम कर रही है जो झारखंड की जनता इस बात को समझने का काम कर रही है । इन्होने साफ शब्दों में कहा इडी दुर्भावना से प्रेरित होकर एवं केंद्र के भारतीय जनता पार्टी की सरकार के इशारे में हेमंत सोरेन कि सरकार को बदनाम करने के साजिश रची रही है वह बहुत ही निंदनीय विषय है और झारखंड की जनता को यह इडी को बताना चाहिए कि आखिर क्यों रघुवर सरकार को वह बचाने का काम कर रही है जो रघुवर दास ने पूजा सिंघल को जिस मामले में क्लीन चिट देने का काम किया था आज उसी मामले में आज पूजा सिंघल जेल के अंदर में है ।

श्री नायक ने यह भी कहा कि भारतीय जनता पार्टी भ्रष्टाचार का खेल खेलने का काम किया है भ्रष्टाचार में पुर्ववर्ती सरकार अंतरलिप्त रही है और अब तो हद कर रही है मात्र 18 रैक साइडिंग के लिए के लिये ऐसा षड्यंत्र ऐसा माहौल बना रही हैं कि झारखंड में अवैध उत्खनन औऱ लूट जो हुआ है सब हेमंत सरकार के नेतृत्व मे ही हुआ है । भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में साहिबगंज में अवैध खनन व्यापक रूप से किया गया और उसका जो पाप है वह सभी पाप का घड़ा हेमंत सोरेन के माथे फोड़ना चाह रही है। जिसका अब झारखंड के दलित आदिवासी मूलवासियों अब बर्दाश्त नही करेगी ।

मोबाइल फोन और मानव समाज

मीनू कुमारी

रांची : वर्तमान समय आधुनिक आविष्कारों के कारण भौ. तिक उपकरणों का गुलाम होता जा रहा है। उपकरणों ने हमारे जीवन को तरह–तरह से प्रभावित किया है। जिसकी कल्पना मानव समाज ने शायद ही कभी की होगी। उन्हीं उपकरणों में से एक है चलंत दूरभाष यंत्र, जिसे हम ष्मोबाइल फोन के नाम से जानते हैं। इसके उपयोग से जितने फायदे हैं, उससे कहीं अधिक नुकसान।

मोबाइल बिना जिंदगी नहीं

21वीं सदी को सूचना एवं प्रौद्योगिकी का समय माना जाता है। इस बीच मोबाइल का साथ न होना, लोगों पर नागवार गुजरता है। दिनभर की भागदौड़ में कोई साथ हो न हो, लेकिन अगर मोबाइल साथ न हो, दिन बड़ा लगने लगता है। मोबाइल फोन से हमें अपना शिकार बना लिया है। हम इसके बिना पल भर भी नहीं रह सकते।

दूर होते सगे–संबंधी और परिवार

एक ही छत के नीचे एक परिवार में कई लोग रहते हैं। लेकिन अब लोग खुद मैं ही रिजर्व हो गए हैं। कमरे में रहने के बावजूद आपस में बातें नहीं करते, बल्कि मोबाइल फोन में चिपके रहते हैं। वर्चुअल दुनिया में संगे–संबंधियों से मुलाकात के बाद सशरीर मुलाकात नहीं हो पाती। लोग अब अगर हालचाल पूछते भी हैं, तो सिर्फ सोशल मीडिया पर।

भारत में बदली अभिवादन की परंपरा

मोबाइल फोन आने के बाद भारतीय पश्चिमी परंपरा की ओर अधिक रूख करने लगे, जिसका नतीजा है कि संवाद के दौरानष्नमस्तेष्, ष्प्रणामष् और ष्नमस्कारष् भाषाएं विलुप्ति के कगार पर है। वर्तमान समय में लोग किसी से भी बात करें, तो ष्अंग्रेजोंष् की भांति ष्हाय–हेल्लोष् ही बोलते हैं। इसलिए तो कहते हैं कि अंग्रेज गए और अंग्रेजी छोड़ गए। हालांकि यूके का शीर्ष नेतृत्वकर्ता एक भारतीय मूल का निवासी है।

"अति सर्वत्र वर्जयेत"

संस्कृति में एक सुक्ति है, 'अति सर्वत्र वर्जयेत इसका मतलब है कि किसी भी वस्तु के दोहन से है बचना चाहिए। मगर इस बात को आज की युवा पीढ़ी भला क्यों मानें, क्योंकि अगर मान लेगी, तो स्टेटस डाउन हो जाएगा।

एक शेध में सामने आया है की मोबाइल फोन के ज्यदा इस्तमाल से लोगों के सुनने और ध्यान देने की क्षमता काफ़ी कम हो जाती है। उपभोक्ता अनिद्रा के शिकार हो जाते हैं। हृदय और किड़नी संबंधी बीमारियां होती हैं। कम उम्र में आंखों की रोशनी चली जाती है और लोगों को चश्मा या लेंस लगाना पड़ता है।

मोबाइल फोन के आदि बच्चे

जन्म लेने के साथ ही माता–पिता बच्चों की नजरों के सामने मोबाइल फोन डाल देते। जो कि बच्चे को अपना शिकार बना रहा है। छोटा बच्चा इस उपकरण के बिना नहीं रह पाता और बचपन से ही नजरें कमजोर हो जाती हैं।

विनाशकारी विज्ञान

विज्ञान का प्रयोग उन्नति में सहायक है, वहीं इसका दुरूपयोग जीवन को तबाह कर सकता है। इसलिए खुद के मन को वश में करें और किसी उपकरण को आदत न बनाएं।

खगेन्द्र के हेयर स्टाइल में खोरठा गीतकार विनय तिवारी का नाम

गिरिडीह : सरिया प्रखंड के अन्तर्गत चिचाकी गांव के रहने वाले खागेन्द्र महतो जिनके पिता का नाम है स्वर्गीय भैरो महतो, माता का नाम सोमारी देवी है , पोस्ट बंदखारों, थाना सरिया, ज़िला गिरिडीह, राज्य झारखंड,का रहने वाला है।

खगेन्द्र महतो जागा आर जगावा खोरठा भाषा के आगु बढ़ावा ग्रुप के संचालक भी है जो झारखंड सरकार से सम्मानित खोरठा के मशहुर गीतकार ,कवि ,फ़िल्म लेखक एवं निर्देशक विनय तिवारी के जबरदस्त फैन है। खागेन्द्र महतो ने हमारे संवाददाता को बताया कि हम विनय तिवारी जी को अपना आदर्श मानते है। उनके लिखे हुए खोरठा गीत मुझे खूब पसंद है मैं हमेशा उनका ही लिखा हुआ खोरठा गीत सुनता हूँ। उनके लिखे फ़िल्म हो ,गीत हो या फिर खोरठा कविता मैं बहुत ही मन लगाकर सुनता हूँ,देखता हूँ एवं पढ़ता हूं, और सहेज कर

खोरठा गीतकार और खोरठा के जाने माने रचनाकार विनय तिवारी के लोग इतने दिवाने हैं कि हेयर स्टाइल भी विनय तिवारी का गये.

भी रखता हूँ। मैं एक बार विनय जी से मिला भी हूँ वो काफी अच्छे इंसान है। उन्होंने अपना पूरा जीवन खोरठा गीत, संगीत, सिनेमा एवं खोरठा साहित्य के लिए मानो समर्पित कर दिए है। लोग अपने आदर्श व्यक्ति के लिए कुछ भी करते है मैंने अपने माँथे के हेयर स्टाइल पर उनका नाम लिखा लिया, मुझे सकून मिलता है मैं खुश हूं, लोग क्या बोलेंगे इसका मुझे परवाह नहीं है।

बदलते समय के साथ सुदूर गांवों का हाल

स्वाति कुमारी

राँची : समय के साथ सब कुछ बदल रहा है, चाहे वो इंसान का रहन–सहन हो या उसके जीने का तौर–तरीका। लेकिन कहीं न कहीं वो अपने अस्तित्व से दूर होते जा रहे हैं। विकास तो हो रहा, लेकिन शहर से दूर गांव वहीं का वहीं स्थिर है। या यूं कहें कि और पीछे जा रहा है, लोग अपने गांव से दूर अपनी उन्नति के लिए शहर का रूख कर रहे हैं। लेकिन अपने पीछे छोड़ जा रहे, अपनी मिट्टी, अपना गांव। वर्तमान समय मे भी ऐसे कई गांव हैं, जहां बिजली अब तक सही से नहीं पहुंच पाई, लेकिन सुकून उसी गांव की मिट्टी में मिलता है। भाग–दौड़ की जिंदगी से दूर एक ऐसा जगह जहां लोग अब भी दूसरों के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं, जहां अब भी बुजुर्गो का सम्मान होता है, जहां के लोग प्यार का मतलब समझते हैं, जहां अब भी सब साथ बैठ खाना खाते हैं। भारत का विकास तो हो रहा है, लेकिन कहीं ना कहीं अपनी ही संस्कृति को खोते जा रहे हैं।

बिहार की संस्कृति का साज बनारू लिट्टी–चोखा

प्रणय प्रबो

पादक, हिन्दी

भारत के इतिहास के पन्नों को पलटकर देखें, तो पता चलेगा कि मुद्रा निर्माण से पहले साझेदारी परंपरा के तहत सामानों और संस्कृतियों का आदान–प्रदान होता था। लेकिन मुद्रा के आविष्कार के बाद लोगों का लोभ बढ़ता गया। लोग जरूरत और उपलब्धता के अनुरूप सामानों का दाम तय करने लगे। ऐसे में साझेदारी परंपरा पर बेड़ियां लगने लगी और 21वीं सदी के भारत में यह प्रथा पूरी तरह से खत्म हो गयी। पहले लोगों की मान. सिकता ऐसी थी कि वो संस्कृति का आदान–प्रदान करें, लेकिन वर्तमान समय में लोगों से अनजाने में संस्कृतियों का आदान–प्रदान हो जा रहा है। हम ऐसा इसलिए कह रहे हैं कि वर्तमान समय में हम स्वार्थ के साधक हो गए हैं और हमारा पूरा ध्यान जीवन की गाड़ी को आगे बढ़ाने की ओर चला गया है। जिंदगी की गाड़ी पटरी पर तब ही सरपट भागेगी, जब हमारे जेब में "दमड़ी" होगी। ये दमड़ी हमारी जेब में तभी आएगी, जब हम घर की मुर्गी दाल बराबर कहावत को न दोहरा कर, संस्कृति का आदान–प्रदान करेंगे। तो चलिए आपको बिहार के प्रमुख व्यंजन का स्वाद चखाते हैं।

संस्कृति का संरक्षण बना रोजगार का साधन

एक राज्य को दूसरे राज्य से जोड़ने के लिए दोनों में से किसी एक में कोई न कोई खासियत होना जरूरी है। चाहे वह रीति–रिवाज, खान–पान, पहनावा–ओढ़ावा, कला–संस्कृति और साजो–सामान ही क्यों न हो? लेकिन किसी न किसी रूप में ऐसी भिन्नता, जो लोगों के मन को भाए। तभी वह राज्य अन्य राज्यों के लोगों के मन में घर बना सकता है। ठीक उसी तरह बिहार राज्य भी लोगों की जुबां पर है, चाहे वह मैथिली, भोजपुरी, मगही और अन्य भाषाओं के लिए हो या फिर स्वादिष्ट व्यंजन लिट्टी–चोखा के लिए। वैसे लिट्टी–चोखा को सिर्फ व्यंजन का नाम देना उचित नहीं, बल्कि ये तो बिहार का साज है। बिहार की संस्कृति में घुला–मिला लिट्टी–चोखा अब देशभर के लोगों को लुभा रहा है। यह सिर्फ लोगों के मुंह का स्वाद भर नहीं रहा, बल्कि कई परिवारों के जीविका का साधन भी बन चुका है।

हम लिट्टी नहीं रिश्ते बनाते हैं

चलिए अब बिहार से निकलते हैं और झारखंड की राजधानी रांची की ओर रूख करते हैं। रांची का हृदय स्थली कहे जाने वाले मोरहाबादी मैदान घूम आते हैं। मैदान के किनारे लगे ठेले को झांक आते हैं।

ठंड के मौसम में ठेले पर कोयले के चूल्हे पर गया से आए दंपति बड़े प्यार से ग्राहकों के लिए एक जोड़ा लिट्टी सेंकते नजर आ रहे हैं।

"घी वाली दूं या बिना घी वाली"

उनके मुंह से ये शब्द तो जरूर सुना होगा। लेकिन जो आत्मीयता इन शब्दों में नजर आयी, उसे अंतर्मन से महसूस करने की जरूरत है। ठंड में ठिठुरते ये दंपति केवल पेट पालने के लिए ठेले पर लिट्टीयां नहीं सेंक रहें, बल्कि बिहार के राजकीय व्यंजन का स्वाद झारखंड में भी परोस रहे हैं।

चलो यार लिट्टी पार्टी करते हैं

ठंड के मौसम में शाम के समय चार दोस्त अगर पार्टी करने का मन बनाएं, तो उनकी जुबां पर सबसे पहले जिस व्यंजन का नाम आता है, वो लिट्टी–चोखा ही होता है। वो भी गोयठे पर सेकी गई लिट्टियां। धधकती आंच के बीच सत्तू भरे आंटे की लोई और चार यार, ये कोई कहानी नहीं, बल्कि बिहार के दोस्ती को दोस्ती को दर्शाती है। जहां ये चार यार आग की आंच को बुझने नहीं देते और फूंक मार–मारकर हर बार लौ को जीवित रखते हैं। जब लिट्टी पक जाती, तो इनकी मेहनत सफल हो जाती। फिर क्या जल्दी–जल्दी लकड़ी के सहारे लिट्टीयां निकालते और चोखे–चटनी के लिए भाभी, दीदी और मां से याचनाएं करते। बाकी बहन तो भाई सबकी प्यारी बहन है, इसलिए चोखा–चटनी बनाने के लिए घूस के रूप में लिट्टीयां ही मांग लिया करती। बिहार की ये परंपरा आपसी सौहार्द, भाईचारे और परिवार के बीच प्रेम को दर्शाती है।

बस तैयार हो गई लिट्टी

आटा, सत्तू, धनिया पत्ता, नमक, मिर्च, अदरक, पानी, सरसों तेल, अजमाइन, मंगरैला और अचार का मसाला ले आओ, फिर लिट्टी तैयार करते हैं। आटे को गूंथकर, सत्तू का मसाला बनाते हैं। आटे की लोई बनाकर उसमें सत्तू के मसाले को डालते हैं। हल्की आंच पर उसे पकाते हैं। पांच मिनट में लिट्टी तैयार और ठंड छू–मंतर।

भैया जरा चोखा और बैंगन का भर्ता डालिए

यह एक लाइन शायद सभी ने उस वक्त जरूर कही होगी, जब लिट्टी बची रह जाती। लेकिन चोखा और बैंगन का भर्ता पल भर में चट हो जाता। क्योंकि इन दोनों के स्वाद के बिना लिट्टी का मजा फीका रह जाता है। बाकि कोयले के चूल्हे पर पका बैंगनी बैंगन जब अपना रंग दिखाता है, तो खाने वालों के मुंह से सिर्फ एक ही शब्द निकलता है, "लाजवाब।"

अर्थव्यवस्था में लिट्टी–चोखा का योगदान

भारत में कई ऐसे सुदूरवर्ती गांव हैं, जहां आजादी के 75 साल बाद भी विकास नहीं पहुंचा। लेकिन लोग खुद के विकास के लिए शहर का रूख करने लगे हैं। "घर की मुर्गी दाल बराबर" यह कहावत उस समय चरितार्थ होता है, जब बिहार में कोई लिट्टी–चोखा को महत्व नहीं देता। वही लिट्टी झारखंड सहित अन्य प्रदेशों में 20–50 रुपए प्रति प्लेट बेची जाती है। ये ग्रामीण कारोबारी घर से अपना पेट पालने निकले थे, लेकिन इन्होंने बिहार की संस्कृति का संरक्षण किया और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में अहम भूमिका निभाई है। लिट्टी–चोखा महज एक व्यंजन मात्र नहीं, बल्कि बिहार राज्य का राजकीय व्यंजन है। जो कि इन दिनों सिर्फ ठेले पर ही नहीं, बल्कि बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन समेत अन्य पब्लिक प्लेटफॉर्म्स पर आसानी से उपलब्ध है। हर रोज करोड़ों की संख्या में लिट्टियां बेची जा रही है। जिससे विक्रेता का अर्थोपार्जन तो हो ही रहा है, साथ–साथ राज्य और देश की अर्थव्यवस्था में भी बढ़ोतरी हो रही है।

लिट्टी के शौकीन हा,
त बिहार चल आवा।
एक जोड़ा लिट्टी खा के,
ढेकार मार आवा।

(स्वदेशी भोजन खाएं, देश की अर्थव्यवस्था में चार चांद लगाएं।)

मन को संतुलित रखने वाली भाषा : संगीत

ऋचा कुमारी, एमिटी यू

निवर्सिटी, रां

ची : संवाद संप्रेषण के लिए शब्दों और भाषाओं को प्रा. थमिकताएं दी गयी है। लेकिन एक ऐसी भाषा जिसे दुनिया का हर इंसान पसंद करता है। उसे अपने दैनिक जीवन का हिस्सा मानता है। जब कभी थकान महसूस करता है, तो उस भाषा से मन को तरंगीत करता है। हम किसी और भाषा कि नहीं बल्कि कर्णप्रिय ध्वनियों की बात कर रहे हैं। जिसे संगीत का नाम दिया गया है। पौराणिक काल से भारतीय संस्कृति में बसी यह भाषा राजघरानों से निकलकर आम लोगों के जीवन तक पहुंची है। इसकी क्या कुछ खासियत है? आइए जानते हैं।

संगीत से अच्छी कोई भाषा नहीं

"दुनिया में चाहे कितनी भी भाषाएं क्यों न आ जाएं, लेकिन संगीत से अच्छी कोई भाषा नहीं। क्योंकि इसे सब समझते हैं।" श्रीकृष्ण की बा. सुरी से निकली धुन हो या तानसेन के तानपुरा से निकले तान। संगीत हर सभी के जीवन में अलग–अलग पलों में अलग–अलग भूमिका निभाती है। ज़िन्दगी एक खूबसूरत धुन की तरह है, लेकिन सरगम के सुर की तहत जिंदगी में भी उतार–चढ़ाव बने रहते हैं। संघर्षपूर्ण जीवन में भी संगीत ने अपना स्थान बना लिया है। इसलिए जब कुछ समझ नहीं आता, तो हम वाद्य यंत्रों का सहारा लेते हैं और यह थेरेपी के रूप में काम करती है। संगीत से मानसिक तनाव दूर होता है और काम करने की क्षमता को बढ़ाता है।

तानसेन समारोह

तानसेन समारोह भारत में आयोजित होने वाला सबसे पुराने संगीत समारोहों में से एक है। इसका आयोजन अकबर के दरबार में रहने वाले महान संगीतकार तानसेन को श्रद्धांजलि देने के उद्देश्य से किया जाता है। तानसेन संगीत समारोह का आयोजन हर वर्ष दिसम्बर माह में मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले के "बेहत" नामक गांव में किया जाता है।

संगीत और यादें

संगीत की कोई सीमा नहीं होती, चाहे वह कोई भी भाषा, शैली या ताल हो, वह हमेशा सबका दिल जीत ही लेती है। जब भी मन उदास होता है, तब संगीत को सुनने से मन प्रफुल्लित हो उठता है। कुछ संगीत ऐसे होते हैं, जो पुरानी यादों को ताजा कर देते हैं।

स्वास्थ्य और संगीत

एक भारतीय आमतौर पर एक सप्ताह में 19.1 घंटे संगीत सुनने में बिताता है। संगीत एक चिकित्सा के रूप में कार्य करता है, यह हृदय की स्थिति सहित विभिन्न विकारों को दूर करने में मददगार साबित हुआ है, तनाव कम करता है, आत्म–सम्मान में सुधार करता है।

यह पाया गया है कि यदि आप एक ड्रमर हैं, तो आपके पास समस्या–समाधान कौशल की प्रबल समझ होती है। संगीत सुनने से हमारे शरीर में हार्मोन का संत. ुलन बना रहता है, जिससे दिमाग शांत रहता है। 'डॉक्टर्स भी अब संगीत चिकित्सा को बेहतर मानने लगे है क्योंकि मनपसंद संगीत सुनने से शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। जिससे शारीरिक और मानसिक विकार ठीक होते हैं।'

हजारीबाग का पिकनिक स्पॉट : कैनरी पहाड़ी

नवजीत शाहदेव

हजारीबाग : हजार बागों वाला शहर के नाम से विख्यात झारखंड का हजारीबाग जिला खूबसूरत पर्यटक स्थलों से भरा पड़ा है। इन पर्यटन स्थलों में से एक है कैनरी पहाड़ी। हजारीबाग शहर से लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर यह उत्तर पश्चिम दिशा में स्थित है, जहां से हजारीबाग शहर का पूरा नजारा देखने को मिलता है। वैसे तो हजारीबाग में अनेक पहाड़ियां हैं लेकिन उनमें से कैनरी पहाड़ी प्रमुख है। इस पहाड़ी की नैसर्गिक सुंदरता और इसके शिखर से हजारीबाग शहर का विहंगम दृश्य का अवलोकन किसी को भी लुभा लेता है। कैनेरी के शिखर से सुबह सूरज की पहली सुनहरी किरणों को हरे–भरे वृक्षों और पत्थरों के चट्टानों के बीच से असंख्य नगीनों की तरह चमकते हुए उगते देखना एक अलौकिक एहसास कराता है। इस पहाड़ी पर एक इमारत (वाच टावर) का निर्माण भी किया गया है, जहां से पर्यटक खू. बसूरत तस्वीरों को अपने कैमरों में कैद करना नहीं भूलते हैं। इस टावर तक पहुंचने के लिए 605 सीढ़ियों की पैदल यात्रा करनी पड़ती है। वही पहाड़ी के दूसरी ओर रेस्ट हाउस और वहां बने दूसरे वाच टावर तक जाने के लिए वाहन का प्रयोग होता है।

पिकनिक स्पॉट के रूप में यह कैनरी पहाड़ी हजारीबाग वासियों के लिए काफी प्रसिद्ध है। यही नहीं यहां बिहार ,बंगाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों से भी हजारों लोग पूरे साल अपने परिजनों के साथ घूमने आते रहते हैं । पहाड़ी के चारों ओर जंगल है और रात में जंगली जानवरों को भी देखा जा सकता है। सरकार इस क्षेत्र में एक हिरण सफारी स्थापित करने का विचार कर रही है।

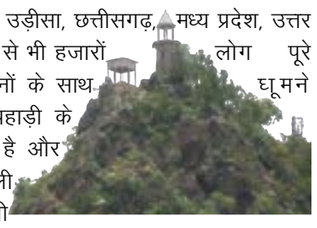

शहर के शोरगुल से दूर यहां का बिल्कुल शांत व प्राकृतिक मनोरम दृश्य मन को हर लेता है। सुबह सुबह यहां ट्रैकिंग के शौकीन लोग भी आते हैं और पक्षियों की चचाहट के बीच प्रकृति की शुद्ध हवा से तरोताजा होकर रोमांचक एहसास के साथ अपने दिन की शुरुआत करते हैं। यही नहीं रचनात्मक कार्य करने के लिए भी यहां बिल. कुल अनुकूल वातावरण है, जिसमें साहित्यिक व कलात्मक विचारों की उत्पत्ति होती है। झारखंड की लाइफ लाइन कही जाने वाली राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 33 की नव निर्मित सड़क इस पहाड़ी के बगल से गुजरती है, जिसके कारण यहां आना अब और भी आसान हो गया है। हजारीबाग शहर में रेलवे के आ जाने से पर्यटक अब ट्रेन द्वारा भी यहां पहुंच सकते हैं पर दुर्भाग्य यह है कि रेलवे द्वारा अब तक कोई लंबी दूरी की ट्रेन शुरू ही नहीं की गई है, जिससे की यात्री सीधे हजारीबाग पहुंच सकें।

स्थानीय निवासियों की लापरवाही और प्रशासनिक ध्यान न दिए जाने के कारण इस कैनरी पहाड़ी की स्थिति काफी दयनीय हो गई है साथ ही पानी जैसी मूलभूत सु. विधाओं का भी घोर अभाव है, जिस कारण यहां ज्यादा समय तक रहना संभव नहीं हो पाता है। ऐसे में इसे एक पर्यटन केंद्र के रूप में स्थापित करना हमारे लिए चुनौती है।सरकार यदि ध्यान दे तो इस स्थल को झारखंड की शान बनने में देर नहीं होगी।

ई–रूपी पेमेंट सिस्टम क्या है? अर्थ, खासियत, कार्य प्रणाली, लाभ

रवि कुमार महतो

आजकल डिजिटल लेन–देन का जमाना है। लोग ज्यादातर पेमेंट ऑनलाइन करना पसंद करते हैं। कोरोना काल में इसमें बढ़ोतरी देखने को मिली है। विदेशों में डिजिटल करेंसी काम कर रही है और भारत में भी इस पर काम चल रहा है। इसी बीच भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ई–रुपी नाम के डिजिटल पेमेंट सिस्टम को लांच किया है। यह सिस्टम क्या है? यह कैसे काम करता है? इसकी खासियत क्या है? जैसे कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर आज हम आपको इस पोस्ट में जानकारी देंगे। आइए शुरू करते हैं

ई–रुपी क्या है?

देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी ने दो अगस्त, 2021 को इलेक्ट्रॉनिक वाउचर पर आधारित एक डिजिटल पेमेंट सिस्टम को लांच किया है। इसे ई–रुपी यानी म–त्व्च् का नाम दिया गया है। आपको बता दें कि इस इस पेमेंट सिस्टम को नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया यानी एनपीसीआई (NPCI), वित्तीय सेवा विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और नेशनल हेल्थ अथॉरिटी (NHA) ने तैयार किया है। यह मूलतः एक गिफ्ट वाउचर की तरह कार्य करेगा। इसे वहीं व्यक्ति प्रयोग कर सकेगा, जिसके नाम पर यह जारी होगा।

ई–रुपी की खासियत/ विशेषताएं क्या हैं?

दोस्तों, आइए अब आपको ई–रुपी की खासियतों से रूबरू कराते हैं। इसकी कुछ खूबियां इस प्रकार से हैं–

- **भारत का यह अपनी डिजिटल करेंसी के तौर पर पहला कदम है।**
- **जैसा कि हमने बताया, यह एक डिजिटल यानी एक कैशलेस पेमेंट सिस्टम है।**
- **लाभार्थियों को यह एक एसएमएस या क्यूआर कोड के रूप में प्राप्त होगा।**
- **ई–रुपी एक तरह से गिफ्ट वाउचर जैसा होगा, जिसे बिना किसी क्रेडिट/ डेबिट कार्ड, मोबाइल एप या इंटरनेट बैंकिंग विशेष केंद्रों पर रिडीम कराया जा सकता है।**
- **यह बिना किसी फिजिकल इंटरफेस के सर्विसेज उपलब्ध कराने वाले को लाभार्थियों से कनेक्ट करेगा।**
- **यह जिसके नाम होगा, केवल वही इसे इस्तेमाल कर सकेगा।**

ई रुपी पेमेंट सिस्टम कैसे काम करेगा?

दोस्तों, अब आपको बताते हैं कि इस सिस्टम की कार्य प्रणाली क्या रहेगी। आपको बता दें कि ई–रुपी को यूप. ीआई (UPI) प्लेटफॉर्म पर तैयार किया गया है। एक वो बैंक होंगे, जो e-RUPI वाउचर जारी करेंगे। एक वो जो इन्हें स्वीकार करेंगे। किसी भी सरकारी एजेंसी या कारपोरेट को वाउचर के इस्तेमाल के लिए सहयोगी

सरकारी या निजी बैंक से संपर्क करना होगा। लाभार्थियों का आईडेंटिफिकेशन उनके मोबाइल फोन नंबर के माध्यम से होगा।

सेवा प्रदाता यानी service providers को बैंक एक वाउचर आवंटित करेगा। यह किसी व्यक्ति विशेष के नाम पर होगा और सिर्फ उसी व्यक्ति को डिलीवर होगा। वही व्यक्ति निर्धारित कार्य के लिए इसका इस्तेमाल कर पाएगा। इस तरह से त्वरित और सुरक्षित लेन देन संभव होगा।

ई–रुपी वाउचर कौन–कौन बैंक जारी करते हैं?

साथियों, अब आपको ई–रुपी वाउचर जारी करने वाले बैंकों का ब्योरा देते हैं। आपको बता दें कि कुछ बैंक ऐसे भी हैं, जो दोनों काम करेंगे। वर्तमान में ऐसे 11 बैंक हैं जो e-RUPI को सपोर्ट करेंगे। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, ICICI cSad] HDFC cSad] PNB एक्सिस बैंक और बैक ऑफ बड़ौदा जैसे बड़े बैंक इस वाउचर को जारी भी करेंगे और स्वीकार भी करेंगे। केनरा बैंक, इंड्सइंड बैंक, इंडियन बैंक, कोटक महिंद्रा और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया वाउचर जारी करते हैं, स्वीकार नहीं करते।

ई–रुपी के मुख्य लाभ क्या हैं?

मित्रों, इस ई– रूपी पेमेंट सिस्टम के कोई एक या दो नहीं, बल्कि कई लाभ हैं, जो कि इस प्रकार से हैं–

●ई–रुपी पेमेंट सिस्टम पैसा भेजने वाले और पैसा वसूल करने वाले के बीच 'एंड–टू–एंड एन्क्रिप्टेड' है। इसका अर्थ यह है कि यह सुरक्षित है। दो पार्टियों के बीच किसी तीसरे का कोई दख़ल नहीं है।

●ई–रुपी के माध्यम से लेन देन में लाभार्थियों का ब्योरा पूरी तरह से गोपनीय रहता है। लिहाजा, इसे आसान और सुरक्षित माना जा रहा है।

●इस सिस्टम को तेज और भरोसेमंद माना जा रहा है, क्योंकि इस गिफ्ट वाउचर में आवश्यक राशि पहले से ही मौजूद होती है।

●इस गिफ्ट वाउचर का इस्तेमाल सरकार या अन्य पक्ष मुद्रा सहायता के लिए भी किया जा सकता है।

डिजिटल करेंसी से कैसे भिन्न है ई रुपी

मित्रों, अभी हमने आपको बताया कि ई रुपी भारत का

डिजिटल करेंसी की ओर पहला कदम है, लेकिन यह कई मायने में डिजिटल करेंसी से भिन्न है। आपको बता दें कि देश का केंद्रीय बैंक रिजर्व बैंक आफ इंडिया यानी आरबीआई (RBI) डिजिटल करेंसी की योजना पर काम कर रहा है। और e-RUPI की लांचिंग से देश में डिजिटल पेमेंट्स इंफ्रा में डिटिजल करेंसी के नजरिए से क्या स्थिति है, इसका आकलन किया जा सकेगा।

ई–रूपी की विशेषताएं ही इसे वर्चुअल करेंसी से भिन्न बनाती है। आपको बता दें कि पहले से मौजूद डिजिटल पेमेंट के तरीकों से यह इस मायने में अलग है कि ये वाउचर की शक्ल में मिलेंगे। आसान भाषा में कहें तो ये प्रीपेड गिफ्ट कार्ड है। इन्हें रिसीव करने वाला व्यक्ति इन्हें अपनी सुविधा के हिसाब से इस्तेमाल कर सकता है। इसके लिए इंटरनेट और बैंक अकाउंट की जरूरत नहीं है।

एक उदाहरण से समझिए ई–रुपी पेमेंट सिस्टम

हम आपको उदाहरण के जरिए यह सिस्टम समझाते हैं। मिसाल के तौर पर मान लीजिए कि सरकार गरीबों को वैक्सीन लगवाने के लिए पैसे देना चाहती है। इसका एक तरीका तो ये है कि वो सबके अकाउंट में नगदी ट्रांसफर कर दे। इसमें दिक्कत ये है कि बहुत से लोगों का बैंक अकाउंट ही नहीं होता। दूसरे यह भी पता नहीं रहेगा कि जो पैसा भेजा गया, उससे वैक्सीन ही ली गई। ऐसे में e-RUPI काम आएगा।

यह एक SMS अथवा क्यूआर कोड के रूप में भेजा जा सकता है। यह इस्तेमाल और रिसीव करने वाले के हिसाब से यूनिक होंगे। यानी कि जिसे यह भेजा गया है, वही व्यक्ति तय कार्य के लिए ही इसका इस्तेमाल कर सकेगा। वैक्सीन के लिए भेजा गया e-RUPI वाउचर जिसके मोबाइल नंबर पर आया है, वही वैक्सीन के लिए इसका इस्तेमाल कर सकता है। साथ ही, इस वाउचर के इस्तेमाल के बाद इश्यू करने वाली संस्था को भी नो. टिफिकेशन जाएगा कि वाउचर का इस्तेमाल हो चुका है।

पेमेंट सिस्टम पारदर्शी और लीकेज फ्री डिलीवरी देगा

ई–रूपी पेमेंट सिस्टम देश में डिजिटल लेन देन और डीबीटी को बढ़ावा देगा, ऐसा माना जा रहा है। इसके माध्यम से लोगों को पारदर्शी और लीकेज–फ्री डिलीवरी में सहायता मिलेगी। इसके जरिए कल्याणकारी योजनाओं को लीकेज फ्री तरीके से डिलीवर किया जा सकेगा। यानी इन योजनाओं का दुरूपयोग नहीं हो सकेगा। कोई कर्मचारी भुगतान के बदले रिश्र्वत नहीं मांग सकेगा। योजनाओं का क्रियान्वयन पारदर्शी तरीके से संभव होगा।

आपको बता दें कि ई–रुपी का इस्तेमाल मातृ–शिशु कल्याण योजनाओं, टीबी उन्मूलन कार्यक्रम, आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अंतर्गत दवाओं और खाद सब्सिडी आदि योजनाओं के अंतर्गत सेवा प्रदान करने के लिए किया जा सकेगा। इसके अलावा निजी क्षेत्र की संस्थाएं भी अपने कर्मचारी कल्याण और सोशल रिस्पांसिबिलिटी प्रोग्राम के तहत इन डिजिटल वाउचर्स का इस्तेमाल कर सकेंगी।

खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस पेमेंट सिस्टम को लांच करते हुए कहा कि न सिर्फ सरकार, यदि कोई एनजीओ किसी को उसकी शिक्षा या इलाज में सहायता करना चाहती है तो वे नगद भुगतान की जगह की जगह ई–रूपी का इस्तेमाल किया जा सकेगा। इससे दान दी गई राशि का निर्धारित उद्देश्य के लिए इस्तेमाल संभव होगा।

ई–रुपी से वित्तीय लेन–देन सरल और जिंदगी आसान होगी

ई–रुपी के जरिए सरकार का फोकस ईज आफ लाइफ (ease of life) पर भी है। वह बगैर किसी परेशानी के लाभार्थियों को भुगतान सुनिश्चित करना चाहती है। इसीलिए इसे विशेष मुद्रा सहायता का भी जरिया बनाया गया है। यह निजी कंपनियों के लिए भी आसान होगा।

उदाहरण के तौर पर मान लीजिए कि कंपनी ने आपकी सेलरी के अलावा किसी महीने में 300 रुपये प्रति कर्मचारी एक्स्ट्रा पेमेंट के तौर पर देने का फ़ैसला किया है। ऐसे में ई–रुपी वाउचर मददगार होगा। इसे कंपनी आपके मोबाइल फ़ोन पर मैसेज या फत कोड के रूप में भेज सकती है। इसके साथ ही वाउचर का इस्तेमाल हुआ या नहीं, ये ट्रैक करना भी संभव है।

भारत में डिजिटल ट्रांजेक्शन बढ़ाने पर जोर

दोस्तों, सरकार का लक्ष्य देश में डिजिटल ट्रांजेक्शन को बढ़ाने पर है। कोरोना काल में डिजिटल ट्रांजेक्शन में अभूतपूर्व वृद्धि देखने को भी मिली है। एक गैर सरकारी रिपोर्ट पर भरोसा करें तो पिछले साल यानी 2020 में भारत के कुल ट्रांजैक्शन यानी का 89 फ़ीसदी कैश में हुआ। इसके ठीक विपरीत विश्व की आर्थिक महाशक्ति चीन का 44 फ़ीसदी ट्रांजैक्शन कैश में था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने डिजिटल इंडिया का नारा दिया है। लेकिन उनके इसे लेकर किए गए प्रयासों को और अधिक गति देने की आवश्यकता है। ऐसे में विशेषज्ञ ई–रुपी को लेकर उठाए गए उनके कदम को बेहद लाभदायक और सकारात्मक मानकर चल रहे हैं। उनका मानना है कि जैसे–जैसे कम कीमत वाले स्मार्टफोन का इस्तेमाल बढ़ेगा, उसके साथ ही साथ देश में डिजिटल वॉलेट के इस्तेमाल में भी इजाफा देखने को मिलेगा।

दोस्तों आपको बता दें कि वर्तमान में देश के प्रसिद्ध डिजिटल वॉलेट में पेटीएम, फोनपे, अमेज़न पे, एयरटेल मनी और गूगल पे जैसे डिजिटल वॉलेट का इस्तेमाल बेहद आम गया है। ई–रुपी की सफलता के प्रति सरकार और वित्तीय विशेषज्ञ दोनों ही बेहद आश्वस्त हैं।

कई देशों में पहले से है यह पेमेंट सिस्टम

ई–रुपी जैसा पेमेंट सिस्टम पहले से कई देशों में होगा। अमेरिका में एजुकेशन वाउचर्स या स्कूल वाउचर्स का एक सिस्टम है। इसके माध्यम से सरकार स्टूडेंट्स की पढ़ाई के लिए पे करती है। यह सब्सिडी सीधे माता–पिता को उनके बच्चों को शिक्षित कराने के मकसद से दी जाती है। अमेरिका के इतर कोलंबिया, चिली, स्वीडन, हांगकांग जैसे कई देशों में स्कूल वाउचर सिस्टम लागू है।

ई–रुपी से जुड़े सवाल

- **ई–रुपी क्या है?**

ई–रुपी एक डिजिटल पेमेंट सिस्टम है। यह एक गिफ्ट वाउचर की तरह काम करता है।

- **ई–रुपी की शुरुआत कब और किसने की?**

ई–रुपी की लांचिंग देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दो अगस्त, 2021 को की।

- **क्या ई–रुपी डिजिटल करेंसी है?**

जी नहीं, ई–रुपी डिजिटल करेंसी नहीं है।

- **क्या इस पेमेंट सिस्टम को लागू करने वाला भारत पहला देश है?**

जी नहीं, बाहर के कई मुल्कों में डिजिटल वाउचर पेमेंट सिस्टम पहले से लागू है।

- **क्या सभी बैंक ई–रुपी वाउचर जारी और स्वीकार करते हैं?**

जी नहीं, अभी सभी बैंक इसे जारी और स्वीकार नहीं करते।

दोस्तों, यह थी ई–रुपी के बारे में सारी जानकारी। उम्मीद है कि आपके लिए उपयोगी साबित हुई होगी। यदि आप ऐसे ही किसी अन्य रोचक और ज्ञानवर्धक विषय पर हम से जानकारी चाहते हैं तो उसके लिए नीचे दिए गए Email ID में भेज करके अपनी बात हम तक पहुंचा सकते हैं। आपकी प्रतिक्रियाओं का हमें हमेशा की तरह इंतजार है।

कविता

एक उम्र में कैद

एक लड़का !
जिसे उजाले अच्छे नहीं लगते,
जिसे अंधकार ने घेर रखा है।
अकेलेपन की दीमक धीरे–धीरे जिसे खा रही है।
जिसे खुली हवा में साँस लेना अच्छा नहीं लगता।
जिसके भीतर अज़ीब–सा अंधेरा है।
दरवाज़े से लगकर किसी के होने का महसूस करता है।
जो हर रात अपना तकिया भिगोता है।
वो बेहतर जानता है,
कि मुझे एक दिन राख होना है और
बन जाना है मिट्टी मुझे।
फिर भी हार नहीं मानता लड़ता रहता है खुद से।

वो जानता है जीवन उसका है,
इससे अत्यंत प्रेम करना है।
उठना है, लड़ना है, और निकलना है
जीवन के जंग पर।
ये लड़ाई उसकी खुद की है।
जो खुद से लड़ता है
वो लड़ जाता है दुनिया से भी।

और जब लड़ेगा फिर
आएगा फैसला एक दिन
उसके भी पक्ष में।
और वो करना चाहेगा
खुद से प्रेम, सब से प्रेम।

पीयूष निश्चल

भाई की परेशानी

सुबह से गुमशुम और परेशान–सा था भाई
मुझे लगा घर में पापा ने बातें होंगी सुनाई
रात में जब मैं जा रही थी सोने
मेरे पास आकर अचानक लगा वो रोने
मैने पूछा–तुम्हें हुआ क्या है भाई
पहली बार है जब तूने अपनी परेशानी किसी को न हो बताई
वो बोला–बहन अब तू ही दे दे मेरा साथ।
पापा की उम्मीदे भी टिकी है, माँ को नई साड़ी भी देनी है
तुझे भी आगे पढ़ाना है, अब घर मुझे ही चलाना है
समाज के तानों से घिरा हूँ मैं
नॉकरी के लिए हद से निचे घिरा हूँ मैं
घर की स्थिति समझ कर नही पूरी की पढ़ाई
लेकिन फिर भी लोग करते है मेरी बुराई
अब तू ही बता बहन मैं क्या करूँ
किस से अपना दर्द बयाँ करूँ
जाना चाहता हूँ दूर यँहा से
तुम्हे देखकर पैर नही हिलते कँही से
माँ सुनकर बोली–अरे पगले! तू तो है घर का जरूरी अंग
आगे बढ़ बेटा हम सब है संग
मत हो तू इतना परेशान
बस बेटा बढ़ा दे हम सबकी शान

- Shampa"Jyoti"

हम धडकने है, कोयला खानों के

हम मजदूर है,कोयला खानों के,
हम धडकने है,कोयला खानों के–2
अगर धडकने ही नहीं रहेंगें तो,
कोयला कहाँ से लाओगे ?
बडे–बडे,कल–कारखानें और रेलगाडियाँ,
कैसे चला पाओगे–2 ?
कैसे कर पाओगे हिन्दुस्तान का अंधियारा दूर ?
कैसे बना पाओगे,बिजली और पावर भरपुर –2 ?
दिन हो या रात,जी तोड़ मेहनत करते है हम,
धरती का चीर सीना काला हीरा उपजाते है हम –2
बरसात हो,या हो,जाडे की हाड तोड़ कपकपाती ठंड़,
या हो तपती चिलचिलाती धूप,
हर मौसम में उत्पादन करके,
लक्ष्य पुरा करते है हम–
धरती का चीर सीना काला हीरा उपजाते है हम–2
जिससे हो गई हमारी कम्पनी–2 मिनी रतन,
मिनी रतन से नवरतन,
और नवरतन से महारतन ।
कोयला महान,कोयला खदान महान–2
कोयले से जुड़े सारे सुपरवाईजर,अधिकारी और हर एक मजदूर महान–2
क्योंकि ! कोयला के बिना अंधेरा है सारा जहान,
क्योंकि ! कोयले से चमकता है सारा हिन्दुस्तान–2
मैं 'तारो' हूँ एक अदना सा माइंनिंग सरदार,
दिन–रात रखता हूँ,उत्पादन और सुरक्षा का ध्यान –2
जय–जवान,जय–विज्ञान,जय श्रमिक महान ।
जय–सुरक्षा,जय–सी सी एल,जय–झारखंड ।।

✍ तारा चन्द महतो

भूख – एक कहानी

✍ Rupa Prasad

माँ डब्बों में कुछ तलाश रही थी, पता नहीं क्या? वो क्या है ना मेरे बाबा नहीं है ना तो पूरे घर की जिम्मेदारी माँ के कंधों पर ही है, बाबा के साथ माँ मुंबई आई थी शादी के बाद सपने तो बहुत बड़े थे मगर मेरे आने के कुछ महीनों बाद ही बाबा भगवान जी के पास चले गए। माँ कुछ ढूँढ रही थी और उधर पड़ोस के टेलीविजन से कुछ आवाजें आ रही थी कोई बीमारी की और तालाबंदी सुनते ही माँ भाग कर बाहर गयी और उदासी से वापस आई।घर में कुछ खाने को नहीं था कुछ पैसे ढूँढ कर निकाले माँ ने पर बाजार तो बंद था। उस रोज हमदोनों ने कुछ नहीं खाया। दूसरे दिन खबर मिली रासन समान बाटेगी सरकार पर कब? दो दिन गुजार गए कुछ खाने को मिला नहीं कोई अभिनेता कुछ पैकेट में बाँट रहे थे तो एक पैकेट हमें भी मिली हाँ बदले में उन्होंने हमारी तस्वीर भी ली। रासन कुछ दिनों बाद मिला दाल चावल, हमारी भूख के सामने यही 56 भोग के समान थी खाते खाते मन नहीं होता था खाने का पर माँ से कुछ फरमाइश भी नहीं कर सकती थी एक महीने का रासन मिला था वो तो कब का खत्म हो गया और कुछ बचा था। हमें कोरोना से कोई मतलब नहीं था हम तो ठीक से जानते भी नहीं थे इसे, हमें तो मतलब था तालाबंदी से जिसकी वजह से हमें एक रोटी नहीं मिल रही थी। माँ अब अपने हिस्से का खाना मुझे दे देती खुद पानी पी कर सो जाती। कुछ दिन पहले खबर मिली सरकार गांव ले जाएगी मजदूरों को मतलब हमें भी। माँ बहुत खुश थी, सुबह जाना भी था हमें, मैं तो तैयार हो कर बैठी थी माँ को देखा अब तक सोई थी, और कभी ना उठने की नींद सोई थी। कहते हैं कोरोना बहुत खतरनाक बीमारी है मगर मेरे हिसाब से भूख से बढ़कर नहीं।।

झार न्यूज में विज्ञापन के लिए संपर्क करें : 9430397436

कहानी | लिकी झिकी बेरा | **सोहराइ परबे गोरखियाक बड़ी मान**

सुरुजेक किरिनवें देइख समय कर गिआन! लिकी झिकी बेरा

सुभद्रा कुमारी

राँची : ऐहे लेताइरे हरोताइन गाँवें धोना आर मोना नामेक दुइ भाइ रहो हला । आपन गुजबसर करे खातिर गोटे गांवाँक गरु डांगर गोरखी करो हलथीन। रोइज जलपान खाए के घारे –घारे गरु डांगर के खोइल के बन लय जा हला। दुइयो मिल गरु डांगर के बड़ी तिहा करो हलथीन। धोने डांगरेइन के पेटा छुइ–छाइ देइख ले हलय कि भरल हे न नाय। पेट भरल नाय देखले दो[illegible] बनाक माझ लय जा हलथीन। बड़–बड़ चटाइ[illegible] चइढ़ के दुइयो बइसो हलत,लिकी झिकी बेरवें घार डहराइ दे हलथीन । डांगरेइन के कोन्हो दरद पिरा भेले दुइयो भाइ के टक–टकी लगाइ देखइते दुइयो बुइझ जा हलत । भिर जाइ छुइ–छाइ जर–बोखार देइख सेबा –जतन करो हलत।

सेहे दिन लेरुवा गइया जोरे बन चइल देलय, दूइयो भाइ घुरुवेंक बड़ी जोर करला मेकिन आगु–आगु दउरे लागलय। आर गाढ़े–नाले उमइक भुले लागलय। उमकेइत –उमकेइत छलो. इके गाढ़े गिर गेलय।संगे–संग गढ़कल–गढ़कल गामाइर गाछेक मोढ़ा गढ़वें गिरलय जेकर से गोड़ा टुइट गेलय।

मोना गाछेक छाहें गामछा बिछाइ पतय गोछियाइ –गोछियाइ बाँधो हलय ,आर धोना गरुक पाछु–पाछु सोहराइ गीत गुन–गुनाइ गुन –गुनाइ गोबर गोइठा बिछो हलय। सेहे समय गइया लेरुवाक गिरल देइख गढाक चाइरो धाइर घुइर–घुइर आखड़ –खाइड़ करे लागलय । से देइख दुइयो भाइ दउरल आइके लेरुवाक उठाइलथीन। आर गोड़वें हाड़जोड़ा बाँइध के फेरा–पाछु कोरवें कइर घार आनलथीक ।

घुइर दिन गोठ पुजा हलय ,धोने मोनाक कहलय आइज नदी धाइर लय चल घास–पात मिलतय मन गड़ाइ चेरबथीन । आर बेरा अछइते घर डहराइ देबइ । गोठे जे गइया डिम्बा डेगतइ अकर मिरआक फेटवा (पगड़ी) एड़ी ले धिसर तय। सांझी पहर दुइयो भाइ सहराइ गीत गुन –गुनाइते कुलही मुड़ाइ गरु गोठाइलथीन। गावेंक नाया (पाहन) सारइ पतइ कर दोने सिंदुर–काजर ,धुप–धुमना, डिम्बा लय के , गाँएआ

ढोल–मांदइर,नगाड़ा, मदनभेरी बाजाइ ले कुलही मुड़ा पहूंच ला । गोठ पुजा भेल बाद गरु–डांगर डहराइलथीन । माहतो घारेक गाइयाक डिम्बा डेगल देइख गिदर से बड़ सभीन कुल–कुली दिए लागलथीन । दुइयो भाइ मिइल के माहतोक फेटा बाँइध देलथीन आर काँधे आलगाइ सोलोआना आखड़ा पहूँचला । सभीन मिइल–जुइल नाचला गाइला आर खाइ पी सुइत गेला ।

मेकिन मोनाक आँखी नींद नाइ धोनाक कहे लागलय दादा आइज रीझे हामर नींद भाइग गेलय। धोने खेखइस के कहलय मनुवा आइज सुइत काइल जगरना लागय राति घारे–घारे गरु डांगर जगवे हेतय ।

घुइर दिन बिहाने जलपान खाइके गरु–डांगर बनेक भितर लय गेला। मोना मने–मन गरुवेन कर पेटा देइख कहे लागलय दादा डांगरइन आघाइ के तुम्बा बेंग जइसन फुइल जा हलत से आइज खोखरनी जइसन खोखराइ रहल हत ! चल नदी पार लय जिबइ । धोने कहलय ठीके कहों हीं रे , पुरुब भर बदरी पानी अनवल हे तनी बेरा अछइते घार डहराइ देबइ ।

नदी पाइर करल बाद मुसला धार पानी बरसे लागलय जेकर से नदीये बाइड़ नाइभ गेलय । मँइछ आँधरा होइते नदीएँ उफान मारे लागलय। दुइयो भाइ सोचे लागला आइज बनेक भितर जगरना करे भेवत , डांगर सब गोठाय के माझे –माइझ दुइयो कुरुमुटु बइठ गेला। ठीक बारह बजलय आर डिम्बा डेगल गइया छाटपटाइ लागलय ,एक घड़ी बाद ढेनुवाइ गेलय आर लेरुवा जाड़े ठुल–ठुलाइ काँपे लागलय ,गाइयो जाड़े रभाइ लागलय । कोनो तरी लेरुवाक आँकआइड़ राखलथीन संगे–संग दुइयो जाड़े काँपे लागला।

मोने कहलय दादा आइज बनेक भितर जगरना भितलय...बाते–चीते दुइयो कखनो–कखनो झपकी लेइत–लेइत बिहान भेलय।सुरुजेक किरिनिया फुटइत–फुटइत नदीक पानी कम भेलय । धीरे–धीरे गरु –डांगर पाइर करलथीन।

गाँवें की जगरना करता गरु–डांगर सब बनें आर लेरु सब भुखे छट– पटाइ रहल हत। सभीन मिइल खोजेले जा हला ताउले डहरे भेटाइ गेला । जलपान बेरा ले गरु–डांगर लय घार आइला। दुइयो भाइ के खाइले देलथीन ।आर सभीन गरोइया पुजा करला ,नावा–नावा धोती–साड़ी पिइध गाय चुमाइलथीन,गोटे आँगना चउअक पुरोला राती गरु –डांगर के निगछा –छरी कइर लेरु सब के चउड़र पिठा बाँधलथीन ।धोना–मोना रिझे–रंगे लेरुवइन से पिठा खोइल के खाइला , आर राति आंकड़ेवें सुइत गेला ।

बिहान बरद खुँटा हेकलय । दुइयो भाइ के मिरवइन धोती–गामछा ,रोटी–पिठा देलथीन । नाहाय खाइ साझी पहर गाँवेंया संग बरद खुँटा खेलला । धोने बरद हेल–हेलवे लागलय आर मोने मादइर बाजवे लागलय । सभीन मिइल–जुइल नाचला गाइला बड़ी हुबे घार घुरला।

राती मोना सोचे लागलय आर कहलय दादा....हामनीक गिदर–बुतरु ,घार –परिवार कुछो नखइ ! आइज नाइ काइल मइर हेराइ जाब , हामनीक नाम ठेकान सब मेटाइ जितय। चल कोन्हो बड़ काम करे शहर जिबइ आर नाम जागा. इबइ ।

धोना खटिया ले उइठ के बइठ गेलय आर हुकाक टान लइके मोनाक कहे लागलय अरे.. मनुवा काम छोट–बड़ नाइ हवोहय इमान से करले सब कामे नाम जागतइ। हामनी तो गोरखिया लागी रे..मेकिन गाँवाक लोक हामनीक बिना जाइग सुतोहत । जगरनाक दिन दुइयो भाइ बने छेकाइल हली से फिकिरे गोटे गांवाँ हाड़ी उपास रहल हलय। गाँवे सभीन हामनीक कृष्ण –बलराम जइसन मान–सम्मान देहत! आर गाँवा छोइड़ परदेश जीभी ....नाइ भगवान से नेहर करही की हामनीक कृष्ण बलराम कर जोड़ी वनल रहे,एहे गाँवे खाटी खाइब ककरो कुछ नाइ बिगाड़ब चल सुत गरु–डाँगर भुखे हत बिहाने बड़का बना लय जिबइ ।

सुइत उइठके मुँह कान धोला–धाला आर जलपान खाइ दुइयो भाइ हाथे मुरली, काँधे बाँसेक छाता टाँइग गरु–डांगर के पाछु–पाछु चइल देला । बना माँझे गाछे चइढ़ धोने खुब भारी मुरली फूँके लागलय । मोने पतइ दतइन तइर के एक बोझा पालहा संग बाँथलय आर कहलय दादा घार चल, आइज डांगरइन भइर पेट आघाइल हत ।धोने कहलय अरे लिकी –झिकी बेरवें अपने घर मुहइड़ जिता ।

लिकी–झिकी बेरा सारइ गाछेक फाँके –फाँके आपन नुका– छुपी खेइल सुरु करल देइख दुइयो भाइ चटाइन ले नाइभ खेइनी साइन के खाइला। आर काँखेक दबवल पइना हाथे लय दुइयो दु देने डांगर घुरवें गेला।

बिधिक बिधान के जाने पारइ लिकी–झिकी बेरे बनेक राजा आपन जोगाड़े बड़का चटाइन कर आड़े नुकाइ के आपन जोखाइ बाछवाक उपर नजइर गोड़ाइ अब तब में हलय !

डाक पुरुसेक कहल बात ..साँपेक लेखा आर बाघेक जोखा ध्योने एक पइना मारलय तइसे ही बाछवा उमइक के आगु बइड़ गेलय । बाघवा गरइज के धोनाक उपर झाँपलय आर गरजे लागलय से बना काँपे लागलय! मोना देइख के बेहस भइ गेइल।गुरु –डांगर भिड़इक के घार पहुँचला।

धोना मोनाक नाय देइख गाँवाक लोक सब जमा भय गेला । सभीन सोचे लागला की भेलय ..डांगर सब पहुँच गेला आर दुइयो भाइ कहाँ हत अँधरिया राइत लागय केइसु डहर गड़बड़ाइ हत ! आइज पानियो नाइ बरसल हे जे नदीये बाइड़ नाभतय ,चला देइख आइबइ । गेइसबती (गैसबत्ती) धराइलथीन आर गाँवेक बड़–बड़ लोक संग कार्तिक माहतो हाथे काँड़ धेनुक (तीर –धनुष) लय के धोना मोनाक भतिज –भतिज ...हाँकवइत हाँकवइत सभीन नदी पार करला । नदी धारे मोनाक बेहस देइख आँखी काने पानी मारलथीन । तनी देइर बादे होस भेलय मेकिन बोली नाइ फुटेलागलय आँकवाइर के भँकइर–भँकइर काँदे लागलय । मोनाक देखवल डहरे सभीन आगु बढ़े लागला । इंजोइर देइख बाघवा गरइज उठलय ऐसन बूझाइलय गोटे बना काँइप गेलय। ककरो आगु बढ़ेक हिमत (हिम्मत) नाइ ..मोने इसारा से देखवे लागलय बाघेक आँइख बिजली बती जेइसन चमकल देइख सभीन सुकुड़ धुम भइ गेला। मोनाक पकइड़ के घार आनलथीन ।अकर काँदना सुइन के गरु –डांगर पाइख– पाखुर हियाफाइर काँदे लागला । कोनो तरी मोनाक चुप करलथीन । मेकिन अकर आँइख सीता नाला तरी बहे लागलय! दादा–दादाक....सिवा कुछ नाइ बोले पारोहलय सभीन जागी बिहान करला ।

बिहाने एक पाकिट पड़ाका लय सभीन नदी धाइर पहूँचला चाइर पाँइच गो पड़ाका फड़इ के बड़का चटाइनकर भीर गेला । जने तने खुइने –खुइन चटाइनकर उपरे बाघेक लाल–लाल भाँइज ! धोनाक चिर –फाइर के लदरी–पटरी निकाइल देल हलय ! देइख समीन हाय– काठ भय गेला । कोनो तरी हिमत जुटाइ धोनाक छत–बिछत देही मोटरी बाँइध गाँवाक मुड़ा आनलथीन।

मोना देइख के छाति पीइट–पीइट काँदे लागलय दादा...आइज तँइष्कृष्ण–बलराम कर जोड़ी तइड़ देलीष तोर नाम मेटाइ गेलय। सभीन मोनाक धीरज बाँधाइलथीन। सुन मोना तोर दादाक नाम आइज अमर भय गेलय ... मोने दादाक कहल बात मन पाइर के सोचे लागलय कोनो काम छोट–बड़ नाय हओहय आइज से बनाक नाम 'धोना धरा बन' भय गेलय।

Artists of Jharkhand

नवीन कुमार करण, DSPMU, रांची

AJETA SHREE KANOUJE
Class : 6 (vidhya Bharti Chinmaya Vidyalaya)

Shruti Gupta, Hazaribag

मनीष महतो, तमाड़, रांची

प्रियंका कुमारी, एमिटी यूनिवर्सिटी, रांची

CHHAYA KUMARI
CLASS : 5, RH PUBLIC SCHOOL

SAGAR KUMAR
CLASS : 3, RH PUBLIC SCHOOL, BURHAKHAP

SAGAR KUMAR
Class: 1 A, RH PUBLIC SCHOOL BURHAKHAP

PRIYANKA KUMARI
CLASS: 6, RH PUBLIC SCOOL BURHAKHAP

खोरठा कविता

एग डुभा बासी भात

अंधरे, बिहाने, लोहखरे
मंगराक छउवा
खा हे एग डुभा बासी भात
आर सगरोदिन हरियर
काजू किशमिशेक त खाइक दूर बाइत हे
देखले नाय हे कधीयो
येकर बाप , बाप करो हे मजूरी
मजूरी के दरद बूझो हे
आर अनपढ़ रहलाक
जिंगइये खूब दुखे सहो हे
अइसन दुखे मंगरा
अपन बुधनाक नाय
देवल चाहो हे जियत जान
सेले दुयो बाप आर बेटा
एकाय पूरनकी सइकिलवा ले
बेटा पढेले आर बाप मजूरी करइल ले, जाहे
अंधरे, बिहाने, लोहखरे
खाइक एग डुभा बासी भात

नेतलाल यादव
जमुआ गिरीडीह

मायकोरवा भासा

मायकोरवा भासा जिनगीक खुंटा हे,
मायकोरवा भासा जिनगीक मुइख अंग हे,
मायकोरवा भासा ले बइढ़ेक आर कुछो नाय हे,
बस येहे एक – दोसरेक बिसवास हे,

मायकोरवा भासाक मान देबा,
विश्व स्तरे इकरा बढ़ावा देबा,
ई भासाक बोलिक खुसीक महसुस करबा,
जे भासाक, होस पावल दिने पावल ही,
सेहे भासाक आइज फिर से,
मायकोरवा भासा दिने ले सुरु करा ।

मायकोरवा भासा हामनि ले सउबसे बढ़कर हे,
दोसर भासा गुला ले छिनइग कर हे,
परचार परसार हामनि आपन भासाक करब,
जिनगीये खुसिया बोटरइत रहब ।

मायकोरवा भासा जिनगीक खुंटा हे,
मायकोरवा भासा जिनगीक मुइख अंग है,
मायकोरवा भासा ले बइढ़ेक आर कुछो नाय हे,
बस येहे एक – दोसरेक बिसवास हे ।

बसन्त कुमार
शोधार्थी
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
विश्वविद्यालय, राँची ।

वर्ष : 01, अंक : 09, रजिस्ट्रेशन : UDYAM-JH-19–0000800, संपादक (हिंदी): प्रणय प्रबोध पाठक, संपादक (खोरठा): दिनेश कुमार दिनमणि, अनाम अजनबी, संपादकीय सलाहकार : नवजीत शाहदेव, फोन : संपादक 9430397436, विज्ञापन : 9199255612, प्रसार विभाग : ओम प्रकाश कुमार, 9430397436 सुझाव या शिकायत ई मेल : khorthajharnews@gmail.com पर मेल करें।